

ब्लॉक - 2

इकाई -1

## INDIA AND DEVELOPMENT

भारत एवं विकास

भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था

संरचना

2.1.1 प्रस्तावना

2.1.2 उद्देश्य

2.1.3 विकास एवं विस्थापन

2.1.3.1 विस्थापन का अर्थ

2.1.3.2 विस्थापन के कारण

2.1.4 विस्थापन और विकास प्रतिमान

2.1.5 विकास एवं पर्यावरण क्षरण/ अपक्षय व असमानता

2.1.6 सारांश

2.1.7 अभ्यास कार्य

2.1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें ।

## BLOCK-2

### INDIA AND DEVELOPMENT

भारत एवं विकास

इकाई-1

भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था

#### **2.1.1 प्रस्तावना**

भारत में स्वतंत्रता पूर्व शिक्षा का विकास हेतु न्यून प्रयास किए गए। और जो प्रयास हुए वे केवल अव्यवहारिक तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करने तक सीमित रहे। परन्तु स्वतंत्रता पश्चात् भारत में अन्य विकसित देशों के समान ही शिक्षा देने हेतु प्रयास किए गये हैं। भारत में गरीबी व्यक्तियों का आंतरिक पलायन में वृद्धि का कारण बनी। पलायन अभाव और विकास दोनों के कारण होता है। पलायन दो प्रकार का होता है – आंतरिक एवं बाह्य।

आंतरिक पलायन / विस्थापन नौकरी, शिक्षा, बाढ़, आकाल, प्राकृतिक आपदा इत्यादि कारण शहर की ओर संभावित होता है। जब पलायन के पश्चात् यदि व्यक्ति अनुकूल परिस्थिति प्राप्त करने के बाद अपने पूर्व स्थान पर नहीं जाते विस्थापन कहलाता है। यही कारण है कि शहरों की जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है।

यह विस्थापन इतिहास से चले आ रहा है। और आज देश के विकास के नाम लोगों को उनकी आजीविका से वंचित के नाम पर लोगों को उनकी आजीविका से वंचित किया जा रहा है उनकी विपन्नता बढ़ती जा रही है। इसके उदाहरण हमें पश्चिम बंगाल, ओड़ीशा उत्तरप्रदेश, हरियाणा आदि राज्यों में देखने को मिलता है। इस विफलता का प्रमुख कारण विकास का निर्धारित करने वाली विचारधारा है इसके चलते मानवीय विकास की जहग आर्थिक विकास को ज्यादा महत्व दी जाती है।

#### **2.1.2 उद्देश्य**

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप

1. भारत को विकासशील अर्थव्यवस्था व विस्थापन के बारे में जान सकेंगे।
2. विस्थापन के कारणों को बता सकेंगे।
3. संवृद्धि, आधुनिकरण, आत्मनिर्भरता व समानता में तुलना कर सकेंगे।
4. पर्यावरण के कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।

5. पर्यावरण अपक्षय के उत्तरदायी कारणों का उल्लेख कर सकेंगे।

### **2.1.3 विकास और विस्थापन**

**2.1.3.1 विस्थापन का अर्थ:—** संविधान के अनुच्छेद 11 में मानव के जीने के अधिकार के बिंदु दिए गए हैं। देश की सर्वोच्च अदालत ने इस अधिकार की कारका करते हुए हर व्यक्ति के लिए सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार करार दिया है। इसके आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक व्यवस्थाएं तथा हित शामिल हैं। अध्ययनों से पता चला है कि लोगों को विस्थापित करने वाली अधिकांश परियोजना में इस कर्तव्य को पूरी तरह से छोड़ दिया गया है जिसका नतीजा परियोजना प्रभावित लोगों की गिरती स्थिति के रूप में सामने आया है। विकास का क्या पैमाना किस पर आधारित हो यह प्रश्न देश के समक्ष खड़ा हुआ। देश के विकास हेतु आर्थिक विकास को प्रमुख माना गया।

#### **2.1.3.2 विस्थापन के कारण**

भारत में विस्थापन के अनेक कारण हैं। —

1. विकास परियोजनाओं से विस्थापन
2. **स्वैच्छिक विस्थापन** — व्यक्ति अपने विकास, शिक्षा, नौकरी, आवास आदि के लिए स्वयं विस्थापन का निर्णय होता है उसे स्वैच्छिक विस्थापन कहते हैं।
3. **प्राकृतिक आपदा** — जैसे बाढ़, सूखा, औद्योगिक हादसे, भूस्खलन, कारखानों के बंद होने आदि पर्यावरण विनाश के कारण व्यक्तियों का विस्थापन होता है। उदाहरण उत्तराखण्ड में बाढ़, राजस्थान में सूखा, यूनियकारबाइड के बंद होना, कृषि पर ओला वृष्टि आदि।
4. **रिफ्यूजी**— संघर्ष (धार्मिक या सांप्रदायिक जैसे मुसलमान विरोधी गुजरात दंगों के दौरान राज्य से विस्थापन कर देश के दूसरे हिस्सों में जाना, (देश की सीमा को लांघना) रिफ्यूजी कहलाते हैं उदाहरण नेपाल जाने वाले भूटानी शरणार्थियों या भारत आने वाले बांग्लादेशी शरणार्थी।
5. भारत निर्मित आपदाओं का शिकार होने के कारण विस्थापन।

---

### **बोध प्रश्न:—**

**टिप्पणी —** इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

प्र.1. विस्थापन का कौन सा कारण है।

1. शिक्षा प्राप्त करने हेतु एक शहर से दूसरे शहर पलायन करना।
  2. देश की सीमा को लांघना।
-

### 2.1.4 विस्थापन और विकास प्रतिमान

1950 आजादी के बाद के पहले दशक में योजनाकारों ने योलनाएँ राष्ट्र निर्माण के सिद्धांत के आधार पर तैयार की। परंतु यह पाया गया कि विकास के फायदे बहुसंख्यक तक नहीं पहुंच पाये, उन्होंने निर्णय लिया के राष्ट्र निर्माण के स्थान पर राष्ट्रीय विकास करना होगा। इसमें यह माना गया कि आर्थिक तरक्की का लाभ सभी नागरिकों तक पहुंच जायेगा। स्व. श्री जवाहरलाल नेहरू व अन्य लोगों ने देश की मिश्रित अर्थव्यवस्था हेतु भारत की समस्याओं के निदान के लिए तकनीक को ही मुख्य समाधान के तौर पर आना। 1964-65 में नेहरू जी ने औद्योगिकीकरण पर जोर दिया। भारत के विकास के लिए अंधविश्वास रूढ़िवादी दृष्टिकोण व परंपराओं को बदलना होगा और आधुनिक बनना आवश्यक है।

आजाद भारत के नेता इस बात में प्रभावित रहे कि तकनीकी विकास द्वारा बेरोजगारी-गरीबी और अशिक्षा की समस्या को दूर करना सम्भव हो पायगा। तथा विकास का फायदा हर भारतीय तक पहुंच जाएगा। परन्तु महात्मा गांधी पश्चिमी अंधानुकरण के विरोध में थे तथा उन्होंने औद्योगिकरण का नहीं उद्योगवाद का विरोध किया। वे ऐसे विकास के विरोधी थे जो तकनीकी और उपयोग की राह पर चलता है जो बहुमत तक नहीं पहुंच पाता है।

भारत में आजादी के समय साक्षरता की दर कम थी। इनमें महिलाओं, आदिवासी व दलित निरक्षक थे। यह इस बात को संकेत करता था कि सामाजिक बदलाव के आभाव में सारे फायदे मध्यम व उच्च वर्ग को ही मिले। इससे अमीर व गरीब के बीच खाई बढ गई। इस खाई को कम कररने के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाने का विचार किया गया अर्थात् सरकार तथा बाजार एक साथ निम्न तीन प्रश्नों के उत्तर दे सके—

1. देश में किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए ? अर्थात् क्या उत्पादित किया जाए ?
2. वस्तुएं एवं सेवाएं किस प्रकार उत्पादित की जाएं। अर्थात् किस प्रकार उत्पादन हो।
3. उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का विभिन्न व्यक्तियों के बीच किस प्रकार वितरण किया जाना चाहिए।

इस सबके लिए सरकार ने 1950 में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में योजना आयोग की स्थापना की। जिसका मुख्य उद्देश्य— विकास की ऐसी प्रक्रिया प्रारम्भ करना है जो रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाए तथा लोगों के लिए समृद्ध एवं वैविध्य पूर्ण जीवन के नए अवसर उपलब्ध करायेगी।

प्रथम पंचवर्षिय योजना पंचवर्षीय योजनाओं के लक्ष्य है संवृद्धि, आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता और समानता। योजना कारों कासे यह ध्यान देना होता है कि चारों उद्देश्यों में कोई अंतर्विरोध न हो।

**संवृद्धि:**— संवृद्धि का अर्थ है देश में वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि देश का सफल घरेलू उत्पाद देश की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त होता है। ये क्षेत्र हैं कृषि, औद्योगिक और सेवा।

**आधुनिकीकरण:**— वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन बढ़ाने के लिए उत्पादकों को नई प्रौद्योगिकी अपनानी पड़ती है। आधुनिकीकरण के बल नवीन प्रौद्योगिकी के प्रयोग तक सीमित नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य सामाजिक दृष्टिबोध में परिवर्तन लाना भी है।

**आत्मनिर्भरता:**— आत्मनिर्भरता का अर्थ है कि राष्ट्र को अन्य देशों पर निर्भरता कम करना जिससे विदेशी हस्तक्षेप को कम कर सके।

**समानता:**— संवृद्धि, आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता के द्वारा जनसामान्य के जीवन में सुधार नहीं लाया जा सकता। अतः यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आर्थिक समृद्धि के लाभ को देश के गरीब वर्ग को भी सुलभ करना ताकि प्रत्येक भारतीय को भोजन, आवास, शिक्षा स्वास्थ्य सेवाएं करने में समर्थ हो सके और धन के वितरण की असमानताएँ भी कम हो जाए।

---

## बोध प्रश्न

**टिप्पणी** — (क) दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए ।

(ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए ।

प्र. 2 संवृद्धि का अर्थ है—

1. प्रौद्योगिकी का उपयोग करना
2. अन्य देशों पर निर्भर रहना
3. देशों के गरीब वर्ग तक सुविधाओं को सुलभ करना।
4. उपरोक्त कोई नहीं।

---

### 2.1.5 पर्यावरण क्षरण/अपक्षय व असमानता

भारतीय अर्थव्यवस्था को आर्थिक विकास बहुत प्रभावित करता है। जैसे-जैसे हम वैश्वीकरण/भूमण्डलीकरण की ओर बढ़ते हैं उच्च आर्थिक संवृद्धि की उम्मीद करते हैं वैसे-वैसे विकास पथ पर पर्यावरण के प्रतिकूल प्रभाव को ध्यान में रखना आवश्यक है।

पर्यावरण में वे सभी जैविक तत्व (पक्षी, पशु, पौधे, वन, मत्स्य आदि) और अजैविक तत्व (हवा, पानी, भूमि, पहाड़, सूर्य किरण) आते हैं जो एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण के चार आवश्यक कार्य हैं।

1. यह संसाधनों की पूर्ति (नवीनकरणीय और गैर नवीनकरणीय संसाधन)
2. यह अवशेष को समहित कर लेता है।
3. यह जननिक और जैविक विविधता प्रदान करके नवीन का पोषण करता है।
4. यह सौंदर्य विषयक सेवाएं भी प्रदान करता है।

पर्यावरण इन कार्यों को बिना किसी व्यवधान के तभी कर सकता है, जब तक कि ये कार्य उसकी धारण क्षमता सीमा में हो। अर्थात् संसाधनों का उपयोग उनके पुनर्जनन की दर से अधिक नहीं भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण के कार्यों पर दबाव बढ़ता जाता है। जिसके कारण अनेक संसाधन विलुप्त हो गए और सृजित अवशेष पर्यावरण के अवशोषी क्षमता से बाहर है। (अवशेष क्षमता का अर्थ पर्यावरण की अपक्षय को सोखने की योग्यता से है। ) अतः पर्यावरण संकट का जन्म होता है। विकास के क्रम में नदया अन्य जल स्रोत प्रदूषित हुए, सूख गए तथा जल को एक आर्थिक वस्तु बना दिया है। पर्यावरण अपक्षय के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव बढ़ता जा रहा है जल तथा वायु की गुणवत्ता (प्रदूषण के कारण ) को गिरावट और सांस तथा जल संक्रामक रोग बढ़ते जा रहे। पर्यावरण स्वरूप व्यय भी बढ़ता जा रहा है।

वैश्विक पर्यावरण मुद्दे जैसे –

1. वैश्विक उष्णता
2. ओजोन क्षय ने देश को अधिक गंभीर बना दिया है। जिससे सरकार को धन व्यय अधिक करना पड़ रहा है। भारत के पर्यावरण के दो तरफा खतरा है।—
  1. एक तो गरीबी के कारण पर्यावरण का अपक्षय
  2. दूसरा खातरा साधन सम्पन्नता और तेजी से बढ़ते हुए औद्योगिक क्षेत्रों के प्रदूषण से है। भारत की अत्यधिक गंभीर पर्यावरण समस्याओं में वायु प्रदूषण, दूषित जल, मृदा प्रदूषण, वन्य कटाव और वन्य जीवन की विलुप्ति है इनमें से प्रमुख है—
    1. भूमि अपक्षय
    2. जैविक विविधता की हानि
    3. शहरी-क्षेत्रों में वाहन प्रदूषण से उत्पन्न वायु प्रदूषण
    4. तजे पानी का प्रबंधन और
    5. ढोय अपशिष्ट प्रबंधन

भारत में भूमि अपक्षय के उत्तरदायी कारण

1. वन विनाश के फलस्वरूप वनस्पति की हानि
2. अधारणीय जलाभ लकड़ी और चारे का निष्पूरण

3. खेती-बाड़ी
4. वन-भूमि का अतिक्रमण
5. वनों में आग और अत्याधिक चराई
6. भू-संरक्षण हेतु समुचित उपायों को न अपनाया जाना
7. अनुचित फसल चक्र
8. कृषि रसायन का अनुचित प्रयोग जैसे रसायनिक खाद व कीटनाशक
9. सिंचाई व्यवस्था का नियोजन तथा अविवेक पूर्ण प्रबंधन
10. भूमि बल का पूनः पूर्ण क्षमता से अधिक निष्कर्षण
11. संसाधनों की निर्बाध उपलब्धता और
12. कृषि पर निर्भर लोगों में परिद्वृता।

उपरोक्त पर्यावरण की चुनौतियों का सामना करने हेतु पर्यावरण मंत्रालय और केन्द्रीय व राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा विभिन्न कदम उठाए गए जिससे भावी पीढ़ी को जीवन की संभसावित औसत गुणवत्ता प्रदान कर तथा पर्यावरण का अपक्षय को रोक सके। (धारणीय विकास)

वर्तमान में एक विश्व, एक मत आदि कल्पना मात्र प्रतीत होता है। विकसित-विकासशील, अमीर-गरीब, प्रबल-दुर्बल आदि में असामनता सुदृढ़ है। जिसे सुधारने के लिये निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए। तथापि कही न कही से किसी न किसी को शुरू करना ही होगा। इसके लिए भारत स्वयं आरम्भ कर सकता है। को दूर करने में हमें निम्न कदम उठाने चाहिए। —

1. हर व्यक्ति को शिक्षा उपलब्ध कराएँ व आरक्षण समाप्त करे। समग्र देश में एक शिक्षा नीति व पाठ्यक्रम हो। प्राइवेट बोर्डों को समाप्त करें।
2. सरकार स्वयं व्यापार करना बंद करे व केवल नियंत्रण करे।
3. सरकार सार्वजनिक व्यवस्था को अपने हाथ में रखे, शेष की निजी को सौंप दे।
4. विदेशी ऋण व विदेशी निवेश को समाप्त करे।
5. आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास करें व घरेलू उद्योग को प्रोत्साहन दे।
6. सामाजिक व पारिवारिक असमानता (जिसको मिटाना असंभव है) में संतुलन के लिए परस्पर सहयोग की प्रेरणा दे। इसके लिए दूरदर्शन, सिनेमा, आदि प्रचार माध्यमों का उचित उपयोग करे।
7. राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर माल उत्पादक संघों का गठन एवं विभिन्न प्रकार के कर्मचारियों के संघों का गठन हो।

8. आयकर को समाप्त करके अनेक प्रकार के उपभोक्ता कर लगाएँ। उन वस्तुओं पर अधिक कर लगाए जाएँ जो धनी अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रयोग करते हैं। गरीबों द्वारा लिए प्रयुक्त अति आवश्यक पदार्थों को करमुक्त कर दिया जाए।
9. रोजगार उपलब्ध कराने हेतु निजी निवेशकों को प्रोत्साहित करें व स्वयं भी सरकार इस दिशा में योजना बनाए।
10. ग्रामीण विकास के अन्तर्गत ऐसी योजनाओं को लागू करें जिनसे नगर की ओर पलायन समाप्त हो औ वही पर लोगों का जीवन स्तर उच्च हो सके। इसके लिए विशेषतः उद्योगों का बढ़ावा देना होगा।

---

बोध प्रश्न

**टिप्पणी** – (क) दिए गए रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए ।

(ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए ।

प्र.3. वैश्विक पर्यावरण के दो प्रमुख मुद्दे बताइये—

- 1.
- 2.

---

### 2.1.6 सारांश:—

अर्थव्यवस्था के अनियोजित होने के कारण व्यक्तियों में पलायन की प्रवृत्ति को जन्म दिया। जिसके द्वारा वह अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर आंतरिक पलायन अस्थाई तथा स्थाई भी हो सकता है। स्थाई पलायन को विस्थापन कहते हैं। मानव के जीने के अधिकार को पाने हेतु विस्थापन देश के समक्ष एक चुनौती के रूप में खड़ा हुआ। यह विस्थापन परियोजनाओं, स्वैच्छिक प्राकृतिक आपदा, आतंकी आक्रमण युद्ध तथा मानवजीवन आपदाओं के कारण होता है।

केवल डालर पर निर्भर रहेंगे तो निश्चित है कि अमेरिका की आर्थिक स्थिति लुढ़कते ही विश्व में आर्थिक संकट उत्पन्न हो जाएगा। एक राष्ट्र की तानाशाही भी कब तक बनी रहेगी? विश्व की सुव्यवस्था के बने अनेक संगठन – संयुक्त राष्ट्र संघ, ग्रीनपीस, यूनिसेफ, नेटो, अंकटाड, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संघटन, डब्लू. एच. ओ. इत्यादि भी विकसित देशों के जेबी संघटन बन कर गए हैं। इस समस्या से निपटने का एक ही उपाय है कि विकासशील देश भिन्न भिन्न माल उत्पादको संघों जैसे औपेक का गठन करें ताकि वे विकसित देशों पर अपना दबाव डाल सकें।

### 2.1.7 अभ्यास कार्य

1. पर्यावरण से आप क्या समझते हैं।



2. निम्न को नवीकरणीय और गैर नवीकरणीय सेवाओं में वर्गीकृत करे। वृक्ष, मछली, पेट्रोलियम, कोयला, लोह अयस्क, जल।
3. आजकल विश्व के सामने ..... और ..... की दो प्रमुख पर्यावरण समस्याएं हैं।
4. पर्यावरण के क्या कार्य होते हैं।
5. धारणीय विकास क्या है।

---

### **2.1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर**

- प्र.1— (ब)  
प्र.2— (द)  
प्र.3— वैश्विक उष्णता  
ओजोन क्षय

### **2.1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें:—**

1. झुनझुनवाला बी. (2004) भारतीय अर्थव्यवस्था राजपाल एण्ड संस
2. N.C.E.R.T. (2014) : अर्थशास्त्र
3. रा. क्षै. अनु. और प्र. (2013) आर्थिक विकास की समक्ष नई दिल्ली
4. रा. क्षै. अनु. और प्र. (2014) भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास
5. शर्मा, आर.के. (2014) समसमायिक भारतीय समाज में शिक्षा, प्रथम संस्करण , राधा प्रकाशन, आगरा
6. भार्गव, एस. (2015) समसमायिक भारतीय समाज में शिक्षा, प्रथम संस्करण , राखी प्रकाशन, आगरा
7. शर्मा, पी.डी. (2015) समसमायिक भारतीय समाज में शिक्षा, प्रथम संस्करण , श्री विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, आगरा